उत्तम हिन्दू
जालंधर, 2 अप्रैल, शनिवार 2011

क्रॉनिक गैर-संक्रामक बीमारियों (एनसीडी) से सचेत करने के लिए गोलमेज सम्मेलन

अमृतसर/दीपक मेहरा

फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हॉस्पीटल, अमृतसर; क्रॉनिक केयर फाउण्डेषन और इम्पैक मल करना है। इसके अलावा, सम्मेलन का उद्देष्य कमजोर आबादी (महिला समूहों और वरिश्ठ नागरिकों) को इस तरह मजबूत बनाना है कि ऐसे लोग अपने स्वास्थ्य की बेहतरी की मांग कर सकें, स्वास्थ्य सेवा से जुड़े लोगों से सकारात्मक संवाद बना सकें और अपनी बीमारी की उपचार व्यवस्था में सक्रिय भागीदारी भी निभा सकें। गोल मेज सम्मेलन में एक 'मल्टी-सेक्टोरल एप्रोच' की अनिवार्यता पर जोर दिया गया जिसके तहत सभी भागीदारों की ऊर्जा, संसाधन और विषेशज्ञता को सम्मिलित रूप से इस मुहिम में झोंकने की बात की गई। क्रॉनिक केयर फाउण्डेषन की मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. रत्ना देवी ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा, "गैर-संक्रामक बीमारियां व्यक्ति विषेश ही नहीं, पूरे समाज को दीन-हीन बना देती हैं। इसलिए अत्यंत जरूरी है कि हम यथाषीघ्र इन बीमारियों की रोकथाम और इलाज की सर्वश्रेश्ठ प्रचलित पद्धतियों के बारे में लोगों को जागरूक करें। देष को एनसीडी के बोझ से आजाद करने के लिए जरूरी है कि समाज के सभी वर्गों जैसे कि सार्वजनिक संगठन, चिकित्सा पेषे से जुड़े लोग, मीडिया और समाज के सबसे कमजोर वर्गों के लोग अर्थात् महिलाएं और वरिश्ठ नागरिक इस काम में योगदान दें। क्रॉनिक केयर फाउण्डेषन का प्रयास साम. दायिक स्तर पर जागरूकता लाना, और राश्ट्र एवं राज्य स्तर पर सेवा देने वालों के साथ-साथ संसाधन जुटाने की मांग करने वालों में जागरूकता लाना है। यह परिचर्चा इस मुहिम की दिषा में एक उल्लेखनीय कदम है।"

फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हॉस्पीटल, अमृतसर के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. एच.पी. सिंह और उसी अस्पताल के मुख्य हृदय रोग विषेशज्ञ सलाहक. र डॉ. अरुण चोपड़ा ने वरिश्ठ नागरिकों की नाजुक स्थिति और बुजुर्गों की देखभाल के बारे में बताया, "बुजुर्गों की देखभाल का मकसद बढ़ती उम्र की वजह से होने वाली बीमारियों की रोकथाम या उन्हें यथासंभव टालना है ताकि बुजुर्गों को मृत्यु से पहले लंबे समय तक बीमारी न झेलना पड़े और वे स्वस्थ जीवन का आनंद ले सकें।